ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 162-163
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

जनजातीय समाज में मद्यपान की समस्या

राखी कुमारी

शोध अध्येत्री, इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार) भारत

Received- 01.10.2019, Revised- 06.10.2019, Accepted - 11.10.2019 E-mail: dr.ramnyadav@gmail.com

सारांश : *जनजातीय लोगों का जीवन सदैव ही समस्याओं से घिरा रहा है, लेकिन आज की लोकतंत्रीय व्यवस्था ने जहाँ जनजाति के लोगों को सार्वजनिक जीवन के साथ जोड़ा है, वहीं इस जनजाति के लोगों में अनेक नवीन समस्याओं ने जन्म लिया है, क्योंकि अधिकांश जनजातीय लोग देश के दूरस्थ घने जंगलों और पहाड़ी हिस्सों में एकाकी रूप से निवास करते हैं। इस कारण इन क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी, यातायात और संचार के साधन आज भी आदिम दशा में हैं, जिसके फलस्वरूप इन लोगों का जीवन एक ओर प्राकृतिक परिस्थितियों पर अधिक निर्भर होने के कारण जीवन यापन में अनेक समस्याओं का स्वभावित रूप से जन्म होता है, दूसरी ओर पर्याप्त यातायात के साधनों का अभाव इन लोगों की समस्याओं का मुख्य कारण है, क्योंकि वर्तमान समय में जहाँ शहरों की चकाचौंध और अनेक आर्थिक समस्याओं ने इन्हें शहर की ओर आकर्षित किया है, वही अनेक समस्यायें इनके सामने बनी हुई है। इनकी समस्याओं में एक गंभीर समस्या मद्यपान की समस्या है।*

कुंजी शब्द – जनजातीय, समस्या, लोकतंत्रीय व्यवस्था, सार्वजनिक जीवन, प्रौद्योगिकी, यातायात, संचार के साधन।

जनजातीय लोगों में एक सबसे भयंकर समस्या मद्यपान अर्थात् नशाखोरी की है। इस जनजाति के लोग प्रायः प्रतिदिन या विभिन्न त्योहारों और समारोहों के अवसर पर मद्यपान करते हैं। मद्यपान के रूप में शराब, ताड़ी का प्रयोग इनके द्वारा किया जाता है। मद्यपान की यह आदत इतनी खराब है कि इसमें जनजातियों के लोग न केवल अपना धन बर्बाद करते हैं, अपितु स्वास्थ्य भी नष्ट कर देते हैं। यह नशे के लिए प्रायः जिन वस्तुओं का प्रयोग करते हैं, वे 'मानक नशा' वस्तुएँ नहीं होती। ये चूंकि गरीब होते हैं। अतः प्रायः सस्ती और हाथ से बनी हुई शराब, ताड़ी और गन्दी वस्तुओं का प्रयोग करते हैं, जो इनके स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक होती है। इससे इनकी आर्थिक दशा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वे मेहनत, मजदूरी करके जो थोड़ा बहुत कमाते हैं, उसका एक बहुत बड़ा हिस्सा नशे पर व्यय कर देते हैं। नशा करने के बाद इनमें विभिन्न प्रकार की अन्य बुराईयां उत्पन्न हो जाती है जिनमें वे पारिवारिक कलह तथा आपसी लड़ाई–झगड़े करते हैं। वे लोग विभिन्न त्योहारों की खुशी भी मद्यपान द्वारा मनाते हैं तथा गम भी इसका उपयोग करते ही करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य : प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1. उत्तरदाताओं के परिवार में मद्यपान की प्रवृति का अध्ययन करना।
2. उत्तरदाताओं के परिवार में नशे के प्रकार की चर्चा करना।
3. मद्यपान के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. मद्यपान और अपराध में सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना।

तथ्य संकलन की प्रविधि : प्राथमिक तथ्यों का संकलन करने के लिए अनुसूची का उपयोग किया गया।

प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण : शोधकर्ती ने अध्ययन क्षेत्र विसुनपुर प्रखंड से 200 उत्तरदाताओं से अनुसूची के द्वारा जो तथ्य प्राप्त किया उसका वर्गीकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण विभिन्न तालिकाओं के द्वारा किया गया है :

तालिका संख्या – 1

आपके परिवार में कौन–कौन से लोग मद्यपान करते है

मद्यपान करने वाले परिवार के सदस्य	संख्या	प्रतिशत
दादा	30	15.0
पिता	62	31.0
चाचा	61	30.5
भाई	30	15.0
माता	17	8.5
योग	200	100.0

तालिका से ज्ञात होता है कि क्रमशः 15 प्रतिशत, 31 प्रतिशत, 30.5 प्रतिशत, 15 प्रतिशत तथा 8.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में दादा, पिता, चाचा, भाई तथा माता मद्यपान का सेवन करते हैं।

तालिका संख्या – 2

उत्तरदाताओं के परिवार में मद्यपान का प्रकार

मद्यपान का प्रकार	संख्या	प्रतिशत
शराब	130	65.0
ताड़ी	70	35.0
योग	200	100.0

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

प्रस्तुत तालिका से ज्ञात होता है कि 65 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्य शराब का सेवन करते हैं तथा 35 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार के लोग ताड़ी का सेवन करते हैं।

तालिका संख्या – 3

मद्यपान का शारीरिक प्रभाव

शारीरिक प्रभाव	संख्या	प्रतिशत
1. सिर दर्द की शिकायत रहती है।	32	16.0
2. पेट में दर्द होता है।	38	19.0
3. लीवर में शिकायत है।	22	11.0
4. थकावट एवं बेचैनी महसूस होती है।	45	22.5
5. त्वचा सम्बन्धी रोग हुए हैं।	28	14.0
6. अब तक कोई प्रभाव नहीं हुआ।	35	17.5
योग	200	100.0

प्रस्तुत तालिका से ज्ञात होता है कि क्रमशः 16 प्रतिशत, 19 प्रतिशत, 11 प्रतिशत, 22.5 प्रतिशत तथा 14 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा है कि मद्यपान का सेवन करने से सिर दर्द की शिकायत रहती है, पेट में दर्द होता है, लीवर में शिकायत है, थकावट एवं बेचैनी महसूस होती है, त्वचा सम्बन्धी रोग हुए हैं। 17.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कथन है कि मद्यपान का सेवन करने से उनके शरीर पर अबतक कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

तालिका संख्या – 4

क्या आप या आपके परिवार के सदस्य प्रतिदिन मद्यपान का सेवन करते हैं?

मद्यपान का सेवन	संख्या	प्रतिशत
हाँ	140	70.0
नहीं	60	30.0
योग	200	100.0

ऊपर की तालिका से ज्ञात होता है कि 70 प्रतिशत या उनके परिवार के सदस्य प्रतिदिन मद्यपान करते हैं तथा 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नकारात्मक उत्तर दिया।

तालिका संख्या – 5

क्या मद्यपान के कारण अपराध को प्रोत्साहन मिलता है?

अभिमत	संख्या	प्रतिशत
हाँ	195	97.5
नहीं	05	2.5
योग	200	100.0

प्रस्तुत तालिका से ज्ञात होता है कि 97.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि मद्यपान के कारण अपराध को प्रोत्साहन मिलता है तथा 2.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिया। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि मद्यपान एक सामाजिक कुरीति है। जनजातीय समाजों में इसकी प्रवृति लगातार बढ़ती जा रही है। इसके कई कारण है। कुछ लोग वैयक्तिक कारणों से जैसे चिंता, मानसिक अशांति, असफलता, निराशा, तनाव, थकान, परिवार के सदस्यों की ओर से उपेक्षा, कलह आदि के कारण मद्यपान का उपयोग करते हैं तो कुछ लोग पारिवारिक विघटन के कारण मद्यपान का सहारा लेते हैं। ऐसे जनजातीय लोग भी है जो मद्यपान का विलास और फैशन का प्रतीक बना लिये हैं। इसके साथ–साथ सामाजिक, आर्थिक, व्यवसायिककरण, नगरीकरण और औद्योगीकरण, अनैतिक पर्यावरण, मनोरंजनात्मक सुविधाओं का अभाव, अनभिज्ञता, भौगोलिक एवं राजनीतिक कारणों से भी मद्यपान करते हैं।

जनजातीय समाजों में मद्यपान का जनजातियों के शरीर और स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा है, मानसिक विकृतियाँ उत्पन्न हुई है, निर्धनता और आर्थिक निर्भरता में वृद्धि हुई है। कदाचार, अपराध, भ्रष्टाचार, पारिवारिक विघटन तथा सामाजिक विघटन उत्पन्न हुआ है।

अतः मद्यपान एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय समस्या है। इसका नियंत्रण केवल छिटपुट रूप से कानून बनाकर नहीं किया जा सकता। किसी भी सामाजिक विधान को तबतक लागू नहीं किया जा सकता, जबतक उसे अधिकांश लोगों का समर्थन प्राप्त न हो। अतः मद्य निषेध के लिए जनजागृति तथा जनआंदोलन आवश्यक है। केवल कानून और प्रशासनिक व्यवस्था द्वारा किसी भी वृहत आकार की सामाजिक समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता, विशेषकर ऐसी समस्या का, जिसके समाधान के लिए जन–समुदाय का एक बहुत बड़ा भाग सहयोग देने को तैयार न हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिद्धान्तालंकार, सत्यव्रतः भारत की जनजातियाँ तथा संस्थाएँ, विद्या बिहार, देहरादून, 1960
2. शर्मा, राजीव लोचनः जनजातीय जीवन और संस्कृति, किताबघर, कानपुर, 1971
3. सिंह सुरजीतः ट्राईब्स एंड इंडियन, सिविलाईजेशन, एन.के.बोस मेमोरियल फाउण्डेशन, वाराणसी, 1982
4. दूबे, एस.सी.ः मानव और संस्कृति, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. उपाध्याय एवं शर्माः भारत में जनजातीय संस्कृति, मध्यप्रदेश ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।

*****